❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष–महाविद्यालय–न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

माघ–फाल्गुनमासः, विक्रम संवत् – २०७०

वर्ष : ६ अंक ६४ फरवरी २०१४ मूल्य : ५.०० रुपये

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

संरक्षक - संस्थापक
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

❖

मुख्य सम्पादक
डॉ. धनञ्जय आर्य (अवैतनिक)

❖

सम्पादक
चन्द्रभूषण आर्य
रवीन्द्र आर्य

❖

कार्यकारी सम्पादक
ब्र. शिवदेव आर्य

❖

व्यवस्थापक
ब्र. अनुदीप आर्य
ब्र. कैलाश आर्य

❖

कार्यालय
श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल
दून वाटिका-२, पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड)
दूरभाष - ०१३५-२१०२४५१
जंगमवाणी - ०९४१११०६१०४
ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in
website: www.pranawanand.org

❖

सदस्यता शुल्क
आजीवन - १०००.०० रुपये
वार्षिक - ५०.०० रुपये
एक प्रति - ५ रुपये

विषय–क्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	२
इस देश का यारों क्या होगा?	४
ईश्वर साक्षात्कार के.....	५
ईश्वर सिद्धि का वैज्ञानिक दृष्टिकोण	९
लघु कथा	११
शिवरात्रि : क्या कोई जागेगा?	१२
उपकार : एक कथा	१४
कठोर–वातोदरामय–हरी =मृद्वीका (द्राक्षा)	१५
कृषक?	१६
अथ श्री ओमानन्द लहरी	१७
योगदर्शनेऽष्टाङ्गयोगः	१९

नीमीतीरे सततसुखदे सर्वतो दर्शनीयम्,
पौन्धाग्रामे नगरनिनदाद् दूरमीक्ष्यं मनुष्यैः।
हैमे तुङ्गे शिखरिशिखरे शोभनोपत्यकायाम्,
आर्षज्योतिर्मठगुरुकुलं राजते संसृतौ मे।।

रवीन्द्रकुमारः

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

सम्पादक की कलम से...

लोक से ही लोकतन्त्र स्थित है, निर्णायक आप ही हैं

अगले कुछ दिनों में एक भयंकर विशाल महायुद्ध का आयोजन होने जा रहा है। आज तक दुनिया के इतिहास में ऐसा घमासान युद्ध कभी नहीं हुआ, जिसमें जीत-हार को दर्ज कराने वाले यही निश्चय नहीं कर पा रहे हैं कि हम किसका साथ दें किसका न दें ? इस युद्ध की तैयारियाँ पूरे जोर-शोर के साथ हो रहीं हैं। इस युद्ध को परिभाषित किया जाता है चुनाव के नाम से। इस चुनाव के निर्णय पर होगा इस देश के भविष्य का निर्णय, एक राजा (प्रधानमन्त्री) का निर्णय।

एक राजा को बनाने के लिए लगभग ५४३ सीटों के लिए हजारों उम्मीदवार रणक्षेत्र में कुदेंगे। इन उम्मीदवारों को विजयी बनाने के लिए ८० करोड़ से भी अधिक नागरिक संनद्ध होंगे। इनको जिताने के लिए अंधाधुंध पैसा बहाया जायेगा। जैसे किसी नदी में पानी बह रहा हो। धन कुबेरों ने अपने खजानों के मुहँ खोल दिए हैं। लोग इसको लेकर अपनी आँखों पर पट्टी बाँध कर अपना मत बिना विचार-विमर्श किये ही दे देंगे।

वस्तुतः देखा जाये तो भारतीय इतिहास में आजादी के बाद पहली वार लोग जागृत अवस्था वाले प्रतीत होते हैं, क्योंकि इसबार के हुए पाँच राज्यों के चुनावी नतीजे स्पष्ट करते हैं कि पिछले कई दशकों से अधिक लोगों ने अपने अधिकार को जाना और अपना मत प्रस्तुत किया।

इन चुनावी नतीजों में लगभग ६० फीसदी लोगों ने अपने अधिकार का प्रयोग किया है, ये हर्ष का विषय है शेष ४० फीसदी लोगों को जागृत होने की आवश्यकता है। लोकसभा चुनाव से सम्पूर्ण विश्व के समक्ष ये प्रथम उदाहरण होगा कि अधिकांश लोगों ने अपने मताधिकार को समझ कर नई सत्ता को कायम किया। वह दिन दूर नहीं होगा जब **'जब जागो तभी सवेरा'** की उक्ति को साकार कर लोग अपने उम्मीदवार को विजयी होते देखेंगे।

हमें जान लेना चाहिए लोक स्थायी है और तन्त्र अस्थायी है। लोक चाहे तो सरकार को बना सकता है और चाहे तो बिगाड़ सकता है।

बहुशः लोगों की मानसिकता है कि हमारे इतनी लम्बी लाईन में अनेक यातनाओं को सहन करते हुए मताधिकार का प्रयोग करने से तो उचित होगा कि हम घर में बैठकर आराम करें। क्योंकि कुछ लोगों का मानना होता है कि-

इस दौड़-धूप में क्या रखा,
आराम करो आराम करो।
आराम सफलता की कुंजी,
इससे न तपेदिक होती है।
आराम सुधा की एक बूंद,
तन का दुबलापन खोती है।
आराम शब्द में आम छिपा,
जो जीवन का रस देता है।
आराम शब्द का ज्ञाता ही,
इस जग में योगी होता है।
मैं अनुभव से यह कहता हूँ,
तुम काम छोड़ आराम करों।।

ऐसी विचारधारावालों ! सावधान जिस राजनीति को गंदगी युक्त मानते हो, वास्तव में हम भी इस बात को स्वीकार करते हैं पर विचार कर देखो-ये घर किसका है? इसको स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी किसकी है? अगर आपका घर गंदा हो जाए तो क्या आप अपने घर को स्वच्छ व पवित्र करने की कोशिश नहीं करेंगे ? यदि स्वच्छ करेंगे तो समझ लो ये देश भी तो आपका ही घर है, इसमें कोई गंदगी फैलाये तो क्या आप स्वीकार कर लेंगे। विचार-विमर्श कर लिया हुआ निर्णय आपके घर (देश) को स्वच्छ बना सकता है। जरा सोचिए आज जो मंहगाई, भाई-भतीजावाद, चोरी, बलात्कार आदि अनेक समस्याएँ हम सब के समक्ष उपस्थित हो रही हैं इन सबका मुख्य कारण गंदी राजनीति ही है।

हम राजनीति में दोष तो देखते रहते हैं पर इस दोष को हटाने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाते। हम भूल जाते हैं कि ये हमारा घर है, अपने सामर्थ्य को भूल जाते हैं, अपने मताधिकार को भुला देते हैं। हमें इस राजनीति में खुद उतरना चाहिए। आज पढ़े-लिखे, चरित्रवान्, विकासवान् नवयुवाओं को राजनीति में उतरना चाहिए। भ्रष्ट राजनेताओं को राजनीति से बाहर करना होगा परन्तु ये समय राजनीति में उतरने का नहीं बल्कि राजनीति से बाहर रहते हुए राजनीति को अच्छा बनाना है। ऐसा नहीं है कि गंदी राजनीति कभी अच्छी नहीं होती, बशर्ते आप उसको सुधारने का काम कैसे करते है? इसके ऊपर निर्भर करती है राजनीति।

अब हमारे समक्ष जो भी पार्टियाँ उपस्थित हैं, उनमें से ही किसी एक का चुनाव करना होगा। कहने को तो सभी राजनीतिक पार्टियाँ भ्रष्टाचार से समाहित है पुनरपि कुछ कम हैं, कुछ ज्यादा हैं। कुछ पार्टियाँ खुले-आम देश को लूट रहीं हैं और कुछ देश का हित करते हुए लूट रहे हैं। ऐसे में चुनाव हमें करना है - हमारे शासक कैसे हों ?

बात को ज्यादा घुमा फिरा के न कहता हुआ सीधी-सादी बात यह है कि हम किस पार्टी को वोट दें ? कोई पार्टी हमारी शर्तो पर खरी नहीं उतरती क्योंकि चुनाव से पूर्व पार्टी अनेक वायदे करती है परन्तु उसको पूर्ण करने की तो बात छोड़ो, उन पूर्व घोषणाओं पर विचार तक नहीं करती। इसके लिए पुराने इतिहास का अवलोकन करना जरुरी नहीं है। हमें देखना चाहिए अभी हाल में ही जिन पाँच राज्यों में नई सरकार जो अपनी घोषणाओं के आधार पर स्थापित हुई हैं, वह अब अपनी घोषणा से विमुख होती दिखाई देती हैं। इसलिए किसी भी पार्टी को वोट देने की बात हमारी समझ में नहीं आती। पर क्या करें ?

प्रत्येक पार्टी में भले-बुरे दोनों प्रकार के लोग मौजूद रहते हैं। हमारी दृष्टि में पार्टी को जिताने के बजाय व्यक्तियों पर ध्यान देना चाहिए। जिताने के पीछे अपने सिद्धान्तों व मान्यताओं की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। प्रमुख बात तो यह है कि - **'देश का सुशासन ऐसे व्यक्तियों के हाथों में जाना चाहिए, जो स्वयं भ्रष्टाचार से मुक्त हो और शासनतन्त्र को भ्रष्टाचार मुक्त कर सकें, साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन न दें, जो देश के सब नागरिकों के लिए समान आचार-संहिता प्रदान कर सकें, जो देश की एकता व रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें, जो अपने व्यवहार से जातिप्रथा के उन्मूलन के लिए कटिबद्ध हो और अनुचित आरक्षण को श्रेय न दें, जो संख्या को नहीं व्यक्तित्व को गिनता हो, जो सदैव देश के हित में अपना हित सोचता हो ना कि अपने हित में देश का हित, जो पश्चिमी सभ्यता की नकल न करके अपने देश में नये शोध कर नवीन विकास की खोज से देश की प्रतिष्ठा देश-विदेशों में करायें इत्यादि अनेक बातों को ध्यान में रखना होगा।'**

बात बहुत लम्बी हो गई अब उपसंहार की ओर अग्रसर होते हैं। सभी पार्टियों के उम्मीदवार आपके पास

वोट माँगने आयेंगे, अनेक प्रकार के वायदे करेंगे, कुछ आर्थिक रुप से आपकी साहयता भी कर सकते हैं, पर आपको वोट उसी को देना है, जो आपकी कसौटियों पर पूर्ण रुप से उत्तीर्ण हो सके, उन्हीं का समर्थन करें अन्यथा उनके वायदे भूल जाने चाहिए, क्योंकि ये तो इन लोगों की राजनीति है, प्रत्येक चुनाव में यही होता है और हम आने वाले पाँच सालों का इंतजार करते हैं।

आप उसे ही वोट दें जो आपके सिद्धान्तों से अधिक से अधिक मेल खाता हो और जिस पर आप सचमुच सत्य और दृढता का विश्वास रखते हों। अन्तिम निर्णायक तो आप ही है। निर्णय तो आपके हाथों को ही लेना है, आपके हाथ ही जीत व हार के निर्णायक है। आपके सही निर्णय की प्रतीक्षा में.... **शिवदेव आर्य**

गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून

इस देश का यारों क्या होगा?

-आचार्य यज्ञवीर

बर्वाद देश को करने को भ्रष्ट एक ही काफी है।
हर प्रान्त में भ्रष्टाचारी हैं अंजामे हिन्दोस्ताँ क्या होगा?
लाइलाज बिमारी करने को एक ही फर्जी काफी है।
हर वार्ड में मुन्ना भाई हो, बीमारों का यारों क्या होगा?
हथियारों का सौदा करने में दलाल एक ही काफी है।
जहाँ हर सौदें में क्वात्रोची हो तो इस देश का यारों क्या होगा?
सरहद पर सैनिक मरते हो नकली सौदों के करने से।
जहाँ धोखे से सैनिक मरते हों उस फौज का यारों क्या होगा?
वीर शहीदों के जब नेता कफन बेचने वाले हो।
मझधार में नैय्या डूबेगी इस वतन का यारों क्या होगा?
जननायक ही खलनायक हो बेझिझक प्रजा को लूट रहे।
इस प्रजातन्त्र प्रणाली का परिणाम न जाने क्या होगा?
माननीय देश को लूट लूट अपना ही खजाना भरते हो।
भूखें नंगे इन कृषकों का दलितों का यारों क्या होगा?
पत्थरदिल पथरी पुलिस हुई बेटी की अस्मत लुटती रही।
जहाँ रक्षक ताने कसते हो वहाँ दलित सुरक्षा क्या होगी?
खून से लथपथ काया है इस देश की बेटी कत्ल हुयी।
बेखौफ दरिन्दे घूम रहे इस देश का यारों क्या होगा?
धर्मधरा हरिद्वार का लक्सर लहू से लहू लुहान हुआ।
गॉव फेरुपुर सिसक रहा इस धर्म का यारों क्या होगा?
अधखिली कली कलुषित कवलित उपवन लहूलुहान यहाँ
यज्ञवीर कहे हे ईश! बता अंजामे हिन्दुस्ताँ क्या होगा?

-गुरुकुल-पौन्धा, देरहादून

ईश्वर साक्षात्कार के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मत-मतान्तरों की भिन्न उपासना पद्धतियों के एकीकरण की आवश्यकता

-मनमोहन कुमार आर्य

हम ईश्वर को मानते हैं और हमें आस्तिक कहा जाता है। संसार के अधिकांश मत व सम्प्रदाय, सनातन धर्मी, जरदुश्त व पारसी, ईसाई, इस्लाम आदि ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। ईश्वर के सम्बन्ध में सभी मतों के बहुत से विचार एवं मान्यतायें परस्पर भिन्न व प्रतिकूल भी हैं यह तो तर्क व प्रमाणों से सिद्ध है कि समस्त ब्रह्माण्ड में ईश्वर की केवल एक ही सत्ता है, जिसने इसे बनाया है। सभी मत मतान्तरों ने उस ईश्वर को भिन्न-भिन्न नाम दे दिये। अपनी-अपनी ज्ञान व क्षमता के अनुसार उसके प्रवर्तकों ने उस सत्ता अर्थात् ईश्वर का स्वरूप भी निर्धारित किया है, परन्तु क्या वह ईश्वर वैसा ही है जैसा उन्होंने निर्धारित या घोषित किया है? ऐसा सम्भव ही नहीं है कि उनके द्वारा निर्धारित सभी बातें, विचार या मान्यतायें जो परस्पर विरूद्ध हैं, सत्य ही हों। अत: ईश्वर एक होने से उसका स्वरूप भी एक समान व अविरूद्ध ही होना चाहिये। यदि उनमें अन्तर है तो यह स्पष्ट है कि उनकी परस्पर विरोधी सभी बातें गलत व असत्य हैं या उनमें से केवल एक ही सत्य है। उस सत्य व ईश्वर के यथार्थ स्वरूप व सत्य गुणों को सभी को जानना व मानना चाहिये और अपनी उस, अनुसंधान, विचार, चिन्तन, ऊहापोह, स्वाध्याय, अध्ययन, वार्तालाप, तर्क-वितर्क से सिद्ध को मानना व मनवाना चाहिये व उस सत्य के विपरीत असत्य मान्यताओं का त्याग करना, छोड़ना व छड़ुवाना चाहिये। यही बुद्धि का उपयोग एवं मनुष्यता है। असत्य बातों को मानते रहना और उसमें सुधार न करना मनुष्यता नहीं है। मनुष्य कहते ही उसे हैं कि जो मननशील होकर स्वात्मवत्, अर्थात अपने समान, अन्यों के सुख-दु:ख व हानि लाभ को समझे वा माने। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा जो निर्बल हैं, भले ही वह ज्ञानहीन व बलहीन ही क्यों न हों, उनसे डरता रहे और उनकी रक्षा, मान, सेवा व सहायता करे। इतना ही नहीं अपितु अपनी पूर्ण सामर्थ्य से अन्यायकारियों के बल की हानि व न्यायकारियों के बल की वृद्धि करें। इस कार्य में उस धर्मसेवी मनुष्य को कितना ही दारूण दु:ख क्यों न प्राप्त हो, प्राण भी भले ही चले जायें, परन्तु इस मानवता रूप धर्म से पृथक वह व अन्य कभी न होवें। यद्यपि वेदों के आधार पर महर्षि दयानन्द द्वारा की गई यह एक आदर्श मनुष्य की परिभाषा है परन्तु इस पर खरा उतरने वाला संसार मे शायद ही कहीं कोई हो।

मनुष्य को मननशील होना चाहिये। ईश्वर को भी विचार का विषय बनाना चाहिये। मुख्यत: इन प्रश्नों पर विचार करना चाहिये कि क्या ईश्वर सत्य है, उसकी सत्ता है या नहीं? वह शरीरधारी है अथवा शरीररहित व आकाररहित है, ज्ञानी है अथवा अज्ञानी, अल्पशक्तिमान है या सर्वशक्तिमान, उसकी शक्ति की सीमायें या मर्यादायें क्या हैं? वह सर्वव्यापक व निराकार है या एकदेशी आदि आदि। इन प्रश्नों पर जब वह चिन्तन करेगा तो उसे ज्ञात होगा कि ईश्वर सत्य, चित्त, आनन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान, निराकार, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र एवं सृष्टिकर्ता है और वही एकमात्र उपासनीय देव, देवता, ईश्वर या परमात्मा है। ईश्वर के अतिरिक्त स्वयं के बारे में भी चिन्तन करना चाहिये व प्रयास करना चाहिये कि हमारा स्वरूप कैसा है और प्रकृति व सृष्टि के गुण क्या है व उसके उपयोग क्या हैं? हम समझते हैं कि जब इन प्रश्नों पर विचार किया जायेगा तो जो तर्क व प्रमाणों से सिद्ध उत्तर होगा वह संसार के सभी लोगों का एक जैसा ही होगा। उसमें भिन्नता किंचित भी न होगी। और यदि ऐसा हो जाये तो फिर नाना प्रकार के मत-मतान्तर समाप्त होकर एक मनुष्य धर्म या मानव धर्म बचेगा जिससे मानवता का कल्याण होगा। ईश्वर व जीवात्मा का स्वरूप निर्धारित हो जाने पर मनुष्य का धर्म निर्धारित करना सरल व सुगम हो जाता है। यही सत्य के मानने वाले लोगों का अन्तिम लक्ष्य व उद्देश्य है। ईश्वर द्वारा वेद में मनुष्यों को ऐसा ही करने की आज्ञा है। सृष्टि के आरम्भ से महर्षि दयानन्द के समय तक और उनके बाद भी वेद मनीषियों द्वारा ऐसे प्रयत्न जारी हैं। बीच में महाभारत युद्ध के कारण इसमें

व्यवधान अवश्य आया था जिसे महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व ज्ञान व क्षमता से दूर किया। आज हमें ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के विषय में सत्य ज्ञान उपलब्ध है जो केवल किसी संस्था विशेष या भारत देश मात्र के लिए नहीं अपितु सारी दुनिया व ससार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रूप से जानने व मानने योग्य है।

हमने पूर्व लिखा है कि संसार के अधिकांश मत-मतान्तर की मान्यताओं के अनुसार उनके अनुयायी ईश्वर व दैवीय शक्ति की सत्ता को मानते हैं जिससे यह संसार सहित हम भी उत्पन्न हुए हैं और उसी सत्ता से यह संसार चल रहा है। यह भी सब मानते हैं कि उस शक्ति के प्रति हमें अपने कर्तव्य पूरे करने है जो उसकी भक्ति व उपासना के द्वारा ही हो सकता है। उपासना से ही स्तुति व प्रार्थना भी जुड़ी हुई है। यदि स्तुति व प्रार्थना नहीं होगी तो उपासना हो ही नही सकती। सभी मतों में किसी न किसी प्रकार से स्तुति, प्रार्थना व उपासना की जाती है परन्तु सबके करने की विधियां अलग-अलग हैं। इन अलग विधियों के कारण ही विवाद होता है। प्राय: सभी व कुछ की यह धारणायें हैं कि इतर अन्य सभी मतावलम्बी उनकी पद्धति से उपासना व धार्मिक मान्यताओं का आचरण व पालन करें इसलिए वह धर्मान्तरण आदि कार्य करते हैं। अत: ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना में हमें ईश्वर का क्या-क्या किस प्रकार से कहना है व उसकी उपासना किस विधि से अच्छी व सर्वांगपूर्ण हो सकती है, इसके लिए यदि सभी मतों के लोग परस्पर प्रेम व सद्‌भाव से बैठकर विचार करें तो इसका हल निकाला जा सकता है। इसके लिए सभी मतावलम्बियों में सत्य को स्वीकार करने का जज्बा होना चाहिये जो कि सम्प्रति किसी में दिखता नहीं है। जो-जो मतावलम्बीजन अपना मत, मान्यतायें व उपासना पद्धति दूसरों से मनवाना चाहिते हैं वह वैचारिक आधार पर स्वमत को सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट व लक्ष्य प्राप्ति में समर्थ सिद्ध कर नहीं पाते, अत: उन्हें इसके लिए अन्य मतावलम्बियों पर बल प्रयोग के साथ प्रलोभन देते हैं या फिर छद्‌म रूप से प्रचार कर भोले-भाले लोगों को फंसाते हैं। इतिहास में हमने इसका साक्षात् दर्शन किया है और आजकल भी लुक-छिप कर नाना प्रकार से यह कार्य किया जा रहा है। ईश्वर का स्वरूप कैसा है इसका उल्लेख पूर्व की पंक्तियों में किया जा चुका है। इस पर सभी मतों के लोग एक साथ बैठ कर विस्तार से चिन्तन कर ईश्वर का सत्य स्वरूप निर्धारित कर सकते हैं। इसी प्रकार से आत्मा का स्वरूप भी निर्धारित किया जा सकता है। हमने चिन्तन व स्वाध्याय द्वारा यह जाना है कि मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग, सर्प आदि योनियों में जीवात्मा का स्वरूप एक ही है अर्थात् सबका जीवात्मा समान है। यह जीवात्मा सत्य, चेतन, आनन्द से रहित है तथा सुख व आनन्द के लिए अग्रसर है। सभी मनुष्यों, पशु, पक्षी आदि की सब क्रियायें व अच्छे बुरे कर्म सुख व आनन्द की प्राप्ति के लिए ही होते हैं। यह जीवात्मा एकदेशी, आकार रहित, अत्यन्त सूक्ष्म, मनुष्य योनि में कर्मो का कर्ता व कर्मो के फलों यथा सुख व दुखो का भोगता है। इस जन्म में इसे पूर्व जन्मों के अवशिष्ट कर्मो का फल भी भोगना होता है। इस कारण कई लोग कर्म फल सिद्धान्त को समझ नहीं पाते। हमने जो पूर्व जन्मों में कर्म किए हैं परन्तु फल अभी नही भोगा है उनके फलों को वर्तमान व भावी जीवन में अवश्यमेव भोगना होगा। इसलिए ऐसा भी हो सकता है कि बुरे कर्म व पाप करने वाला व्यक्ति सुखी हो सकता है और कोई अच्छे व पुण्य कर्मो को करने वाला दु:खी हो सकता है, परन्तु बुरे व्यक्ति के सुख व अच्छे व्यक्ति के दु:ख का एक प्रमुख कारण पूर्व जन्मों के जमा या अवशिष्ट कर्म हुआ करते हैं। जीवात्मा को ईश्वर के द्वारा उसके कर्म, पाप-पुण्य व प्रारब्ध के अनुसार अगले व पुनर्जन्म में मनुष्य व पशु आदि योनियां, आयु व सुख-दुख मिलते हैं। प्रत्येक जन्मधारी की मृत्यु अवश्य होती है और मृत्यु के बाद जन्म अर्थात् पुनर्जन्म होना भी अवश्यम्भावी है। मनुष्य का मनुष्य या पशु पक्षी आदि के रूप में जो जन्म होता है वह कर्मो के बन्धन के कारण होता है। यदि हम सभी कर्मो के फलों को भोग लें, वर्तमान व आगे कोई बुरा कर्म करें ही न, सभी अच्छे-अच्छे कर्म करें और उपासना द्वारा ईश्वर को जानकर उसका साक्षात्कार कर लें तो जन्म-मरण से छुट्‌टी मिल जाती है और जीवात्मा मोक्ष को प्राप्त कर लेता है जिस प्रकार कि जेल में बन्द व्यक्ति की सजा पूरी होने और उस बीच कोई नया अपराध न करने पर जेल से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार आत्मा के बारे में जाना जा सकता है और इसी प्रकार सृष्टि व प्रकृति के बारे में शास्त्रों के अध्ययन, चिन्तन, मनन

व प्रयोगों द्वारा परमाणु व उससे पूर्व की अवस्था तक भी पहुंचा जा सकता है। स्वाध्याय, विचार व चिन्तन से सृष्टि से पूर्व की अवस्था प्रलय में प्रकृति किस रूप में थी, उसका भी पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार से वेद, वैदिक साहित्य, उपनिषद् दर्शन व ऋषि-मुनियों, विद्वानों, ज्ञानियों आदि के सत्य ज्ञान युक्त ग्रन्थों को पढ़कर व जीवित विद्वान मनीषियों से शंका समाधान कर भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। यह सब कुछ पूरा हो जाने पर ईश्वर की उपासना को करके जीवन के उददे्श्य के अनुरूप उचित व करणीय कर्मो व साधना को करते हुए हम बन्धनों से छूटते हैं।

अब सच्ची ईश्वर उपासना की विधि पर विचार करते है। हम समझते है। पौराणिको के मूर्ति पूजा आदि कार्य, ईसाईयों द्वारा चर्च में प्रार्थना आदि अनुष्ठान एवं मुसलमानों द्वारा नमाज अदा करना आदि स्तुति, प्रार्थना व उपासना के ही अन्तर्गत आते हैं। ईश्वर, गाड व खुदा सर्वव्यापक व सर्वातिसूक्ष्म होने से आत्मा व संसार के भीतर विद्यमान है। अत: उपासना अर्थात् उसकी निकटता के लिए कहीं जाना नही हैं। ईश्वर की उपासना तो उसकी हर पल व हर क्षण हमें प्राप्त है। हमें मात्र अपना कर्तव्य पूरा करना है और सावधान होकर शुद्ध मन से उसके गुणों व उपकारो का विचार, चिन्तन व वर्णन, उससे प्रार्थना अर्थात् वह ध्यान व उपासना में हमारी सहायता करे और हम उसका साक्षात्कार कर सकें, आदि बौद्धिक कर्म करने हैं। हम विज्ञान के नियम के अनुसार जानते हैं कि लौह की तार आदि सुचालक Good Conductor में ही विद्युत का प्रवाह होता है, सूखी लकड़ी आदि कुचालक Bad Conductor में नहीं इसी प्रकार से हमें स्वयं को ईश्वर का सुचालक बनाना होगा। इसके लिए हमें अपने गुण, कर्म व स्वभाव को ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभावों के अनुरूप बनाना होगा। जब यह हो जायेगा और स्थिरासन में बैठकर भली प्रकार से हम उपासना अर्थात् इसका ध्यान कर रहे होगें और स्तुति व प्रार्थना चल रही होगी, उसमें डूब जायेंगे और केवल ईश्वर ही हमारे ध्यान में होगा, संसार व उसकी वस्तुओं व व्यवहारों से हम पूर्णत: रूके हुए होगें व उनका सम्बन्ध पूर्णत: अवरूद्ध होगा तो देर या सबेर ऐसी स्थिति आयेगी कि हमें ईश्वर की साक्षात् अनुभूति होगी और उसका साक्षात्कार होगा। इस साक्षात्कार की स्थिति में हृदय की सभी गांठें खुल जाती है और साधक व उपासक नि:शंक हो जाता है। जब तक नि:शंक नहीं हुआ साधना जारी रखनी है। नि:शंक हो जाने के बाद भी उस स्थिति को जारी रखने के लिए साधना व उपासना करना आवश्यक होता है। यह स्थिति प्राप्त हो जाने पर आत्मा के दु:ख व कष्टों का निवारण हो जाता है और मनुष्य सुख-शान्ति-आनन्द की स्थिति को प्राप्त कर लेता है। इसके बाद संसार में कुछ भी प्राप्त करने के लिए नहीं रहता। यही वह चीज व स्थिति है जो प्राप्तव्य है और जिसके लिए हमें मनुष्य जन्म परमात्मा के द्वारा मिला हुआ है। इससे यह ज्ञात हुआ कि उपासना के लिए यम, नियमों का पालन, आसनों की सफलता, प्राणायाम का अभ्यास जो मन को स्थिर करने के लिए किया जाता है, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि का अभ्यास, पालन व आचरण आवश्यक है। यह प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है तथा इसमें किसी मत व सम्प्रदाय के कारण कोई भेद या अन्तर नहीं आता। अर्थात् एक ही ईश्वर संसार के सभी मनुष्यों के लिए उपासनीय है और उसकी विधि भी हमारी निजी दृष्टि में एक ही हो सकती है, अलग विधि से करने पर परिणाम अलग होगें, अनेक विधियों से उपासना करने पर एक परिणाम अर्थात् ईश्वर की उपलब्धि या प्राप्ति नहीं हो सकती। ईश्वर की प्राप्ति उपासना, ध्यान व समाघि आदि से होती है। भोजन का उपासना से गहरा सम्बन्ध है। उपासक को शुद्ध शाकाहारी भोजन करने से लाभ मिलता है और सामिष भोजन करने से उपासना में सफलता नहीं मिलती। उपासक के लिए मांसाहार, मदिरापान, धूम्रपान व अण्डों आदि का सेवन व ब्रह्मचर्य पालन में अनियमितता हानिकारक होती है। जो लोग या मतों के अनुयायी इन अभक्ष्य पदार्थो का सेवन करते हैं वह उपासना से अधिक लाभ नहीं उठा सकते, न उन्हें लक्ष्य ही प्राप्त हो सकता है। इनका सेवन पुण्य कर्म न होकर पाप कर्म की श्रेणी में आता है। इससे स्वयं को भी हानि, स्वभाव का हिंसक होना व मलिन बुद्धि का होना, होता है और पशुओं आदि का जीवन भी संकट में पड़ता है। पशुओं की उत्पत्ति ईश्वर ने भिन्न प्रयाजेनों के लिए की है। उस प्रयोजन को पूरा न होने देना व उसमें बाधा डालने से लोग ईश्वरीय दण्ड के भागी बनते हैं। अण्डों के सेवन से

भी ऐसा ही होता है। धूम्रपान से हमारे शरीर के अन्दर फेफड़ों आदि को हानि पहुंचती है। श्वास की सामान्य प्रक्रिया बाधित होती है, उसका प्रयोजन सिद्ध नहीं होता और वायुमण्डल के प्रदूषण से अन्य व्यक्तियों के श्वांस में भी बाधा आती है, कैंसर आदि रोग भी होते हैं। प्राण वायु के प्रदूषण का निमित्त धूम्रपान वाला व्यक्ति होने से वह ईश्वरीय दण्ड का भागी होता है। अत: उपासक, ध्यानी व ईश्वर भक्त को कदापि इनका सेवन नहीं करना चाहिये। इसके स्थान पर भक्ष्य पदार्थो का ही सेवन करना चाहिये जिसका उल्लेख महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में भक्ष्याभक्ष्य प्रकरण में सविस्तार किया है। यह सिद्ध नहीं किया जा सकता कि आज तक किसी मांसाहारी व सामिष भोजी को ईश्वर के दर्शन व साक्षात्कार हुआ हो ? हां यह तो बताया जा सकता है कि शुद्ध शाकाहारी भोजन करने वालों को ईश्वर का साक्षात्कार हुआ है। महर्षि दयानन्द का उदाहरण हमारे सामने हैं। महर्षि पतंजलि जिन्होंने योग दर्शन ग्रन्थ का प्रणयन किया है वह भी ईश्वर साक्षात्कार को प्राप्त ऋषि व योगी थे, ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

हम जब सभी मत-मतान्तरों पर दृष्टि डालते हैं तो हमें ईश्वर के मानने वाले व उपासकों की कई श्रेणियां दिखाई देती हैं। एक ऐसी है जो परम्परा के अनुसार ईश्वर को मानते हैं और अपने मत के विधान के अनुसार पूजा उपासना करते हैं। उन्हें इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि जो कृत्य वह करते हैं वह उचित है या नहीं। दूसरे ऐसे होते हैं जो अपनी मत की पुस्तक का कुछ कम या अधिक अध्ययन करते हैं। परन्तु उनमे भी ऐसे ही अधिक हैं जो अपनी विवेक बुद्धि से यह जानने का प्रयत्न नहीं करते कि उन्होंने जो पढ़ा है या ग्रन्थों में लिखा वह सत्य है अथवा नहीं। वह जानकारी के लिए पढ़ते हैं, सत्यासत्य के विवेक के लिए नहीं। ऐसे लोग भी हमारी दृष्टि में ईश्वर को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। ऐसे लोग पौराणिक मत सहित सभी मत, पंथ व सम्प्रदायों मे विद्यमान हैं। तीसरी श्रेणी में वह लोग आते हैं जो स्वाध्याय करते हैं, अपने मत के साथ दूसरे मत के ग्रन्थ का भी यत्किंचित अध्ययन करते हैं और अपनी विवेक बुद्धि का प्रयोग कर यह देखते हैं कि उनका पढ़ा या ग्रन्थ में लिखा सत्य है भी अथवा नहीं। शंका होने पर वह ऊहापोह, विचार, चिन्तन, अन्य ग्रन्थों या विद्वानों की सहायता प्राप्त कर निर्णय करते हैं। ऐसे लोगों में सबसे अधिक लोग वैदिक धर्मी वा आर्य समाज के अनुयायी होते हैं। हमें लगता है कि आर्य समाज की सन्ध्या-उपासना की विधि वेद व शास्त्रों के अनुसार है। इसमें मनीषियों ने यह ध्यान रखा है कि यह सरल व लक्ष्य-परक हो व इसके करने से अल्प समय में सफलता प्राप्त हो सके। इसमें त्रुटियों को खोज कर हटा दिया गया है। सन्ध्या-उपासना की विधि में कोई अनावश्यक कृत्य नहीं है और कोई आवश्यक कृत्य को छोड़ा नहीं गया है। अत: इस विधि को हम सन्ध्या-उपासना की सम्पूर्ण विधि कह सकते हैं। यह विधि महर्षि दयानन्द ने अपनी बनाई 'पंच-महायज्ञ-विधि' की पुस्तक में दी है जिसे देखकर अभ्यास किया जा सकता है और उसे जानकर अन्य मतों की पूजा पद्धतियों से मिलान करके सही व गलत का चुनाव किया जा सकता है। हम समझते हैं कि धर्म के प्रबुद्ध लोगों को पहली व दूसरी श्रेणी के भक्तों व उपासकों को तीसरी श्रेणी में लाने का प्रयास करना चाहिये जिससे सभी का कल्याण हो। हमारा अनुभव है कि बिना वेद व वैदिक साहित्य के अध्ययन के सही प्रकार से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नही की जा सकती। सभी अध्येता परीक्षण कर स्वतन्त्र परिणाम निकाल सकते हैं। हमारा यह भी मानना है कि सारे जीवन ईश्वर को मानने व उसकी पूजा, उपासना, भक्ति करने के बाद यदि हम पूर्णत: सफल व सन्तुष्ट नही हैं, ईश्वर की अनुभूति व साक्षात्कार हमें नहीं हुआ है और स्वमत व विपक्षियों के ईश्वर के स्वरूप, स्तुति, प्रार्थना, उपासना से सम्बन्धित शंकाओ या तर्को का सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सकते हैं तो हमारी उपासना व ज्ञान में कहीं न कही कोई कमी अवश्य है। हम आशा करते हैं कि सभी मतो के अनुयायी इस पर मनन करेगें। जीवन का उद्देश्य जन्म व मृत्यु के बन्धन से मुक्त होना है, जिसे 'मोक्ष' कहते हैं। यह मोक्ष सद्कर्मो यथा ईश्वरोपसना, सत्कर्तव्यों का पालन, आचरण, अग्निहोत्र करने, माता-पिता-आचार्यो-अतिथियों व ऋषि-मुनि-विद्वान् संन्यासियों की सेवा व सत्कार, दान, परोपकार, सेवा, अहंकार शून्य स्वभाव, दया व करूणा से पूर्ण जीवन व्यतीत करने आदि कर्मो को करने से प्राप्त होता है। आईये, हम वेद व वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय व तदनुसार तर्क व प्रमाण युक्त ईश्वरोपासना करने का व्रत लें जिससे हम सभी जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

-१९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून

ईश्वर सिद्धि का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

-पं. उम्मेद सिंह विशारद

यह महत्वपूर्ण आध्यात्म लेख महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों व आर्य समाज की मान्यताओं के आधार पर आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण द्वारा संक्षेप में लिखा है, जो महानुभाव ईश्वर को साकार मानते हैं और विभिन्न मनुष्य रूपों में ईश्वर की पूजा करते हैं, उनकी जानकारी के लिए यह लेख महत्वपूर्ण है, क्योंकि सृष्टि में साकार पदार्थों में चेतना शक्ति तो है, जिस कारण उनका विकास व विनाश होता है। उसमें परमात्मा तो है किन्तु आत्मा नहीं है, और प्राणी मात्र में आत्मा का निवास कर्म करने व फल भोगने के लिए है। प्राणियों में केवल मनुष्य शरीर की आत्मा ही ईश्वरानुभूति कर सकती है। सूक्ष्म आध्यात्म दार्शनिक विषय है। पाठक ध्यान से स्वाध्याय करने की कृपा करें।

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पशतत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः। स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमा हुरग्रयं पुरूषं महान्तम्।। श्वेताश्वर उपनिषद् का जो उद्धरण दिया गया है, उसमें स्पष्ट कहा गया है कि ईश्वर के न हाथ है, न पाँव है, बिना हाथों के व बिना पॉवों के गति करता है और उसके न आँख है व न कान। बिना आँखों के देखता व बिना कानों के सुनता है। वेदों में साफ लिखा है ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है, शक्ति है। किन्तु उसमें पदार्थों की तरह अचेतन शक्ति नहीं है। अपितु ईश्वर चेतन शक्ति है। ईश्वर की सिद्धि में विशेष युक्ति है कि सृष्टि में सृजनात्मक चेतन शक्ति का होना और सृष्टि क्रम में नियमबद्धता का होना, सृष्टि में विशालता का होना और स्थायित्व का होना और यह सब लक्षण जड़ जगत्, प्राणी जगत् व वनस्पति जगत में सर्वत्र पाये जाते हैं। जिस शक्ति के कारण सृष्टि में ये लक्षण पाये जाते हैं, वही शक्ति ईश्वर है। यह भी विचारणीय है कि कर्मफल अपने आप कैसे मिल जाता है। कोई निराकार शक्ति अपरोक्ष रूप से अवश्य कार्य कर रही है। ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं या नहीं यह प्रश्न बार-बार उठते रहते हैं, किन्तु आँख से तो ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते हैं। अगर ध्यान को पाँचों ज्ञानेन्द्रियों की तरह छठी ज्ञानेन्द्रिय मान लिया जाए तो ध्यान द्वारा ईश्वर की अनुभूति हो सकती है। क्योंकि ईश्वर का अस्तित्व है, अभिव्यक्ति नहीं अनुभूति हो सकती है। ईश्वर की यह अपूर्व सृष्टि ही ईश्वर की अनुभूति है, दर्शन है।

ऋग्वेद में कहा है कि अमीबा की सूक्ष्म दशा से लेकर महाबुद्धि सम्पन्न मनुष्य के शरीर तक में आत्मा रहती है, क्योंकि अमीबा की देह में वह जैसी गति, मति और चेष्टा करता है उसी में उसकी स्थिति भासने लगती है। गात के विशालकाय शरीर में और अन्य प्राणियों के शरीर में स्वकर्मानुसार जिस शरीर में जाता है वैसा ही बन जाता है । उसका वह रूप आत्मा का प्रत्यक्ष करने के लिए है। मनुष्य की शान सबसे निराली है, क्योंकि केवल मनुष्य के देह में रहते हुए ही उस ईश्वर तत्व की अनुभति हो सकती है।

अधिकांश धार्मिक मतों में ईश्वर को मानव माना गया है:-हम विभिन्न मतों की विवेचना में न जाकर हम वेद एवं वैज्ञानिक आधार पर ईश्वर को मानव रूप में स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि अगर ईश्वर मनुष्य जैसा होगा तो किसी स्थान विशेष में रहेगा और स्तुति उपासना करने से खुश और गाली देने से नाखुश हो जायेगा। इसलिए सम्पूर्ण आर्षशास्त्रों व वैज्ञानिक आधार पर वह ईश्वर अनादि है अनन्त है, आनन्दमय है, सर्वव्यापि है। यदि उसका भौतिक शरीर होगा तो परिच्छिन्न होगा और उसमें जन्म और मृत्यु भी होगी और अनादि अनन्त कैसे होगा इसलिए हमने अपने छोटे से दिमाग में ईश्वर को पुरुष विशेष मानकर उसकी पूजा करनी शुरु कर दी।

ईश्वर व्यक्ति विशेष नहीं शक्ति विशेष है और वह शक्ति विशेष सत्ता भी भौतिक न होकर चैतन्य स्वरूप है। वैसे तो जड़ में भी शक्ति है परमाणुओं का विश्लेषण करते-करते धनात्मक तथा ऋणात्मक विद्युत् कण ही रह जाते हैं।

जो शक्ति के पुंज तथा शक्ति के ही दूसरे रूप है। प्रकृति के परमाणुओं में निहित शक्ति जड़ का ही एक रूप है, वह शक्ति ईश्वर नहीं है, क्योंकि जड़ शक्ति प्रकृति कहलाती है और चैतन शक्ति परमेश्वर कहलाती है और

ईश्वर चैतन शक्ति के कारण ही चैतन्य स्वरूप सृष्टि का कर्त्ता धरता संहर्ता कहलाता है।

विज्ञान के अनुसार:-सृष्टि की रचना 'नेब्यूला' अर्थात् जिसको वेद में हिरण्यगर्भ कहा है। अर्थात् जिसके जिसके गर्भ में अन्तराल में सुवर्ण जैसी चमक है। अन्तरिक्ष में इतने तारे है जैसे समुद्र के तटों पर रेत के कण है, जैसे हमारे सौरमण्डल में गति है वैसे उनमें भी गति व विकास की प्रक्रिया चल रही है, ये सब तारे नभोमण्डल में तीव्र गति से दौड़ रहे है और एक दूसरे से लाखों मील दूर है और करोड़ों सालों से गतिशील हैं, आश्चर्य है कोई एक-दूसरे से टकराता नहीं है। ये सब अग्नि के पुज है। पृथ्वी भी किसी समय अग्निमय थी, धीरे-धीरे अग्नि ठण्डी होती रही और जीवन का बने रहना सम्भव हुआ। वैशेषिक तथा न्याय दर्शन ने पाश्चात्य विचार के धनात्मक तथा ऋणात्मक इलेक्ट्रोन, न्यूट्रोन तथा प्रोटोन की तरह जो जड़ शक्ति के मूलभूत विद्युत्मय अणु है। जब सृष्टि का निर्माण होता है तब दो अणु मिलकर द्वयणुक को उत्पन्न करते है, इसके बाद तीन द्वयणुक मिलकर एक त्रसरेणु उत्पन्न करते हैं, जिसमें ६ अणुओं के मिलने से सूक्ष्मता के बाद स्थूलता आ जाती है।

पाश्चात्य विचार के अनुसार सबसे पहले 'नेब्युला' उसके बाद धनात्मक तथा ऋणात्मक विद्युत्मय तीन अणु इलेक्ट्रोन, न्यूट्रोन, प्रोटीन उनके मिलने से यह सृष्टि बनी। दोनों में भाषा अलग-अलग है विचार मूलतः एक ही है। भारतीय आस्तिक विचार यह है कि जड़ में यह गति विकास अपने आप नहीं हो सकता अगर अपने आप हो सके तो जड़ ही चेतन हो जाए, परन्तु जड़ कहीं चेतन नहीं दिखता क्योंकि बिना शक्ति के जड़ में विकास व गति नहीं हो सकती है।

क्या वनस्पति आदि में आत्मा है:-वनस्पति वृक्ष आदि में चेतना है, चेतना इसलिए है कि इसमें वृद्धि और ह्रास होता है, परन्तु क्या उसमें आत्मा भी है इसको समझने के लिए हमें आत्मा व चेतना शक्ति में भेद करना पड़ेगा। चेतनशक्ति विश्व के कण-कण में कर्तृत्व भाव से सर्वत्र व्याप्त हो रही है और उसी वजह से वनस्पति तथा वृक्षों का बीज पृथ्वी में डालने के बाद गुरुत्वाकर्षण नियम से बंधा होने के कारण नीचे की बजाए ऊपर को अंकुरित होता है किन्तु यह सचेतन शक्ति का ही प्रभाव है इसलिए वृक्ष में चेतन शक्ति है किन्तु आत्मा नहीं है वनस्पति में केवल परमात्मा है, आत्मा नहीं है। आत्मा वह है जो शरीर में आकर कर्मो को करता और उनका भोग करता है वनस्पति तथा वृक्ष में चेतना वह है जो वनस्पति के विकास व विनाश का कारण है किन्तु आत्मा की तरह कर्म नहीं करती कर्मफल नहीं भोगती।

सृष्टि नियम :- देखने में आता है सृष्टि में सर्जन हो रहा है विकास व गति हो रही है। पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, उपग्रह अपनी परिधि में करोड़ों वर्ष में नियमित घूम रहे हैं। सूर्य चन्द्र गहण किस दिन होगा, किस घड़ी होगा इस बात की गणित भविष्यवाणी की जा सकती है। इसी प्रकार वनस्पतियों व वृक्षों के उत्थान-पतन का निश्चित नियम है। आश्चर्य है जैसे जड़ जगत् का नियम निश्चित है वैसे प्राणी जगत के भी अपने नियम है। सृष्टि की हर वस्तु का प्रयोग है। किसी उद्देश्य से उसका निर्माण हुआ है। प्रयोजन का होना सिद्ध करता है कि उसके निर्माण के पीछे कोई चैतन शक्ति है वहीं ईश्वरीय शक्ति है।

सृष्टि की विशालता:-पृथ्वी की परिधि २५ हजार मील है और १३ लाख गुणा बड़ी परिधि सूर्य की है, सूर्य पृथ्वी से ६० हजार गुणा बड़ा है सूर्य की किरण १ लाख ८६ हजार मील की रफ्तार से चलती है और ७ मिनट में पृथ्वी पर पहुँचती है। ब्रह्माण्ड में असंख्य तारे हैं और पृथ्वी से लाखों गुणा बड़े हैं और अन्तरिक्ष में भ्रमण कर रहे हैं। करोड़ों वर्ष हो गये कोई आपस में टकराता नहीं है। इन सबमें कोई अदृश्य चेतन शक्ति कार्य कर रही है।

ईश्वर के दर्शन :-ईश्वर को साकार मानने के कारण आज देश में भगवानों की बाढ़ आयी हुई है। गीता के सातवें अध्याय में ईश्वर निर्गुण रुप व सगुण रुप व अशरीरी रुप का वर्णन किया गया है। कहा है-हे अर्जुन! देख मुझ अशीरीनिर्गुण का शरीर। मैं पानी के रस में सूर्य-चन्द्र के तेज में वेदों के आकार में आकाश की ध्वनि में पुरुषों के पराक्रम में, पृथ्वी के गन्ध में, प्राणी मात्र के जीवन में, तपस्वी के तप में, बुद्धिमान् की बुद्धि में, बलवान् के बल में हूँ और मैं सबमें हूँ सब मेरे सहारे टिके हैं, फिर भी मन्द बुद्धिलोग मुझे जानने का प्रयास नहीं करते हैं। इसलिए जो इस जड़ सृष्टि में प्राणभूत सत्ता के दर्शन कर लेता है, वह ईश्वर को समझ लेता है।

गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उ.ख.)

लघु कथा

एक समय की बात है कि एक वृद्ध व्यक्ति मृत्यु शय्या पर पड़ हुआ था उसके चार पुत्र थे वे सब आपस में लड़ते रहते थे। इस बात से मरणासन्न पिता बहुत चिंतित था। उसने अपने पुत्रों की मूर्खता देखकर यह सोचा कि भविष्य में ये क्या करेंगे ? इसी विचार से वह उन सबको एक लकड़ी का गठ्ठर लेकर आने को कहा। फिर प्रथम बेटे को कहा कि–ये गठ्ठर तोड़ों। इसी प्रकार क्रमशः चारों को कहा गया पर कोई भी तोड़ने में समर्थ न हो सका। तब पिता ने कहा कि–एक–एक लकड़ी को तोड़कर देखों तो वे उसे तोड देते हैं। तोड़ने के पश्चात् पिता ने कहा – बेटा यदि आप इस लकडी के गठ्ठर की तरह एकत्रित रहोगे तो तुम्हें कोई भी तोड़ नहीं सकता, तुम्हारा कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। इस प्रकार चारों भाई प्रीति पूर्वक एकत्रित होकर रहने लगे एवं उच्च सफलता को प्राप्त होने लगे।

शिक्षा : हमें हमेशा मिलकर रहना चाहिए। **प्रस्तुतकर्ता : ब्र. आशीष आर्य**

राष्ट्रिय स्तर पर गुरुकुल पौन्धा के छात्र करेंगे उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय (भारत सरकार) द्वारा संचालित राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (दिल्ली) द्वारा आयोजित उत्तराखण्ड राज्यस्तरीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा का आयोजन दिनांक २–३ जनवरी २०१४ को आदर्श महाविद्यालय, हरिद्वार में किया गया। इस प्रतिस्पर्धा में संस्कृत जगत के अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा गुरुकुलों के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतिस्पर्धा में गुरुकुल पौन्धा के आठ छात्रों ने गुरुकुल का प्रतिनिधित्व किया।

संस्कृत व्याकरण भाषण प्रतिस्पर्धा में गुरुकुल के छात्र ब्र. शिवकुमार आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा साथ ही श्लोक निर्माण समस्यापूर्ति प्रतिस्पर्धा में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। ब्र. कैलाश आर्य ने सम्पूर्ण अमरकोष कण्ठाग्र करके प्रतिस्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। ब्र. ओमप्रकाश आर्य ने रघुवंश के ५ सर्ग स्मरण कर प्रतिस्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। ब्र. गौरव आर्य ने श्लोक अन्ताक्षरी प्रतिस्पर्धा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

इस प्रतिस्पर्धा में प्रथम आने वाले छात्र उत्तराखण्ड राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए भोपाल में आयोजित राष्ट्रिय प्रतिस्पर्धा में भाग लेंगे। इस प्रतिस्पर्धा में प्रत्येक राज्य से प्रथम स्थान प्राप्त विजयी प्रतिभागी ही भाग ले सकते है। इस प्रतिस्पर्धा में गुरुकुल पौन्धा, देहरादून के छात्रों ने सर्वाधिक अंक प्राप्त कर संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वानों से आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रतिस्पर्धा के संचालक श्री भोलानाथ झा जी ने गुरुकुल पौन्धा को विजयी होने पर बहुशः साधुवाद प्रदान किया।

विजयी छात्रों के गुरुकुल पधारने पर गुरुकुल के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, आचार्य डॉ. धनंजय जी, आचार्य चन्द्रभूषण जी, आचार्य यज्ञवीर जी आदि सभी अध्यापकों ने शुभकामनाएँ दी और आगे भी विजयी होने का आशिर्वाद प्रदान किया। **प्रस्तुतकर्ता : सुनीत आर्य**

शिवरात्रि : क्या कोई जागेगा?

-डॉ. अजय आर्य

आ गई शिवरात्रि
फिर जागेंगे लोग रात रात भर
सवाल में कौंधता है मन
क्या कोई जागेगा
तपती दोपहरी के सपाट उजाले में
शंकर की आराधना का लेके नाम
क्यों करते हैं धंधे काले तमाम
शिव बूटी के नाम पीतें हैं, अफीम
या कर जाते है धर्म के नाम का नशा
पीकर धतुरा होतें पागल
बस ऐसा ही है मेरा कल, आज और कल
भैरव के नाम चढ़ती है शरब
जिससे होती है बुद्धि सबकी खराब
कटते हैं आज भी निरीह पशु
कामाख्या की गोद में
वह अनूठी थी शिवरात्रि
जिसने जगाया था मूल शंकर को
शंकर के आँगन में जागा मूलशंकर
मूलशंकर ने झकझोर सब सोने वालों को
धर्म के नाम पर अपना सब खोने वालों को
उस रात शंकर ही शायद बन गया था मूलशंकर
सबका कल्याण करने की इच्छा से
उसने छोड़ दिया अपना सुख वैभव तमाम
वह जगा तो ऐसे कि फिर सो ही न पाया
उसकी आँखों ने वह सब देखा जो
सोई आँखें नहीं देख पाती
उसने देखा विधवा के दर्द को
उसने देखा बच्चों के फेरे को
उसने देखा जातिवाद के घेरे को
उसने देखा मन्दिर में बंधे भगवान् को
उसने देखा इंसान के अंदर बसे शैतान को
उसने देखा झूठ के अँधेरे में भटकते इंसान को
उसने देखा तीर्थ में बहते जल को
उसने देखा उसी के मुढ़ाने डूबती मानवता का
उसने देखा अगरबत्ती के धुएँ में छिपी हुई
बदबूदार वासना की दुर्गंध को
उसने देखी राम की लीला
राम को चिलम उड़ाते
हनुमान को नैन उड़ाते
मातपित की बूढ़ी आँखे तरस रही थी
होके बेताब कर रही थी प्रतीक्षा
किसी श्रवण कुमार की
श्रवण की श्रद्धा सिमट गई थी दे के पिंडदान
उसने देखा श्राद्ध पक्ष में कौओं को हलवा खाते
मातपित को निवाले के लिए चना चबाते
उसने देखा था तप के नाम पर उड़ते धुएँ के
गुबार को
पुराणों ने रच दिया था धर्म का अपना संसार
नित हो रहा था गुलजार ये बाजार
वेद उपनिषद किताबों को बस पढ़ लिया जाता था
ऊँची चौकी पर बैठे धर्माधिकारी को सजदा
किया जाता था
उसने देखा जातिवाद के जहर ने
सद्भाव के तालाब को
मैला कर दिया है
छोड़ दिया है साथ
धर्म ने कर्म का कर्म ने धर्म का
दोनों को उसने जुदा होते हुये देखा
वेद को अब पढतें हैं तोते
मजबूर और लाचार विधवा

बेबसी अश्रुओं के सरोवर में
ठेकेदारों की नियत नहा रही है
गार्गी मैत्रेयी मदालसा को
समझा जाता है, पैरों की जूती
सब जगह है बस मर्दों कू तूती
छल छद्‌म भरा व्यवहार
पाखंड का सजा हुआ बाजार
सतीप्रथा की आग में जबरन
नारी को जलाया जाता था
ऊपरवाले के नाम पर
नीचेवाले के नाम पर
प्रलयंकर की गोद में
चूहे का उत्पात उसने देखा
मिट्‌टी के खिलौने को भगवान् बनते देखा
कृष्ण और राधा का रास देखा
उनके नाम पर इनका नंगा नाच देखा
सांच में आंच देखा
मूल्यों की संस्कृति में उसने नाश देखा
उसने वेदों में भारत को बचाने का सार देखा
अपने सर ऐसा गुरुतर उसने भार देखा
भारत की डोलती नैया पर उसने मझधार देखा
पीकर विष का प्याला उसने नदिया के पार देखा
वेद मन्त्र की पावनधारा को उसने बनते गंगा की
धार देखा
फिर आ गई शिवरात्रि
क्या रात रात भर जागनेवाले
दिन में भी जाग पायेंगे
वे भी वह सच देख पायेंगे
जो देखा था दयानन्द ने
क्यों जाग कर भी नहीं जाग पाते हम
देखकर भी नहीं देखने की आदत
काश! हम बदल पाते।

जेड-१२, गणपतिविहार, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

गुरुकुल पौन्धा में संस्कृतज्ञान प्रतिस्पर्धा का आयोजन

श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून में २६ जनवरी को गणतन्त्रदिवस के उपलक्ष्य में संस्कृतज्ञान प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। इसमें तीन प्रतियोगिताओं को समाहित किया गया, जो क्रमशः सूत्रान्त्याक्षरी, संस्कृतवाङ्मयज्ञान एवं यजुर्वेद मन्त्रात्यक्षरी का अयोजन हुआ। प्रतियोगिता प्रारम्भ होने से पूर्व राष्ट्रभृत यज्ञ आयोजन तथा राष्ट्रिय पर्व मनाया गया। ध्वजारोहण ब्र. सत्यकाम शास्त्री ने किया।
सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर गुरुमित आर्य द्वितीय पर अनिरुद्ध तृतीय स्थान पर सारांश आर्य रहे। द्वितीय प्रतिस्पर्धा संस्कृतवाङ्मयज्ञान की आयोजित हुई जिसमें ब्र.सत्यकाम आर्य, ब्र.यशदेव आर्य व जितेन्द्र आर्य ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। तृतीय प्रतिस्पर्धा यजुर्वेद मन्त्रात्याक्षरी में ब्र.ओमप्रकाश आर्य, ब्र. सुखदेव आर्य, ब्र.देवेन्द्र आर्य ने प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान क्रमशः प्राप्त किया।

प्रतिस्पर्धा में विजयी छात्रों को पुरस्कार प्रदान किये गये तथा प्रथम स्थान प्राप्त छात्रों को राज्यस्तरीय प्रतिस्पर्धा में भाग लेने हेतु नामांकन दर्ज किया गया। इस प्रतिस्पर्धा में ८५ छात्रों ने भाग ग्रहण किया।

प्रतियोगिता का संचालन सत्यकाम शास्त्री ने किया। महाशय सुलतान सिंह एवं श्रीमती कमला देवी रोहतक के सौज्यन से इस आयोजन का सफल समापन हुआ। समापन के अवसर पर आचार्य धनंजय आचार्य चन्द्रभूषण, आचार्य यज्ञवीर, महा. सुलतान सिंह, गौतम कुमार आदि उपस्थित रहे।

-प्रस्तुतकर्ता : शिवदेव आर्य

उपकार : एक कथा

बहुत समय पहले की बात है। जब हमारे देश में दास प्रथा का प्रचलन बहुत बढ़ गया था। एक अंग्रेज अधिकारी था जो अपने कार्य के लिए अनेक भारतीय नागकिों को दास बनाकर जो बहुत गरीब होते है, उन्हें जबरन अपने देश ले जाता था। एक दिन उसने एक देवदास नामक व्यक्ति को बन्धी बना लिया और उसे जहाज द्वारा अपने देश ले जाने लगा। देवदास को बन्धन से बहुत घृणा थी। वह किसी भी प्रकार उस अंग्रेज के बन्धन से छुटना चहाता था। एक दिन उसे रात्री के समय, जब जहाज एक टापु पर खडा था, वहाँ से भागने का मौका मिल गया। सभी सिपाहियों की नजर से बचकर वह जहाज से उतरकर जंगल में भाग गया। अंग्रेज अधिकारी से छुपता हुआ वह जंगल में भटकता रहा। एक समय अचानक उसे किसी के करहाने की आवाज सुनी। डरते-डरते उसने चारों तरफ देखा। उसे कुछ दूर एक शेर दिखाई दिया। वह शेर बार-बार अपने पंजे को चाट रहा था। पहले तो वह डरता हुआ भागने लगा। परन्तु जब उसने देखा कि शेर उसे कुछ नहीं कह रहा तो वह साहस करके धीरे-धीरे उसके पास गया। वह दर्द से करहाता हुआ लगातार अपने पंजे को चाट रहा था। देवदास ने देखा कि उसके पंजे में एक काँटा लगा हुआ था जिसके कारण उसे चलने में तकलीफ हो रही थी। देवदास ने उसका काटाँ निकाल दिया और शेर चुपचाप उठकर जंगल में चला गया। कुछ दिनों बाद देवदास अंग्रेज सैनिकों द्वारा पकड लिया। सैनिकों ने उसे अपने अधिकारी के पास उपस्थि किया। उसने देवदास को बहुत कठोर दण्ड दिया। एक मास तक भूखा रखा जाए और एक मास के बाद उसे जंगली शेर के सामने डाल दिया जाए। एक मास तक कठोर दण्ड पाने के बाद उसे शेर के सामने डाल दिया और वह शेर भी कई दिनों से भूखा रखा था। इसी कारण वह सामने शिकार को पाकर उस पर झपट पडा। परन्तु सामने खडे देवदास की गन्ध को पहचान लिया और वह भूखा होते हुए भी उसके पैर चाटने लगा। वह अंग्रेज इस आश्चर्य को देख कर स्तम्भित रह गया। उसने देवदास से इसका कारण पूछा तो देवदास ने सारी घटना सुना दी। उस घटना को सुनकर उस   अधिकारी का मन बदल गया और उसने संकल्प लिया कि आज के बाद किसी को नहीं सताऊगाँ और हमेशा दूसरे गरीबों की सहायता करूगां।

शिक्षा- इस कहानी से हमे यह शिक्षा मिलती है कि जब कोई हमारा उपकार करे तो उसके प्रति हमे भी कृतज्ञ रहना चाहिए। **ब्र. भूपेन्द्र कुमार (गुरुकुल-पौन्धा)**

वेदार्ष-न्यास के छात्र राष्ट्रिय स्तर पर प्रतिनिधित्व करेंगे........

नई दिल्ली : मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा आयोजित शास्त्र स्मरण प्रतिस्पर्धा लाल बहादूर शास्त्री विद्यापीठ में ७ व ८ जनवरी २०१४ में आयोजित हुई। इस प्रतिस्पर्धा में गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली के ६ छात्रों ने भाग लिया। ब्र. सत्यकाम आर्य ने परिभाषेन्दु शेखर शलाका प्रतिस्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। ब्र. यशोदेव ने धातुरुप कण्ठपाठ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सत्य प्रकाश ने श्लोकान्त्याक्षरी में प्रथम व श्लोकनिर्माण समस्यापूर्ति में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी के साथ भूपेन्द्र ने रघुवंश में प्रथम व श्लोक निर्माण समस्यापूर्ति में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। ब्र. अतीश ने अमरकोष स्मरण में प्रथम व ब्र. प्रियव्रत ने अष्टाध्यायी प्रतिस्पर्धा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतिस्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त छात्र भोपाल में आयोजित होने वाली राष्ट्रिय स्तरीय प्रतिस्पर्धा में भाग लेंगे। विजयी छात्रों के गुरुकुल पधारने पर गुरुकुल के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने आशीर्वाद एवं राष्ट्रिय स्तरीय पर विजयी होने की शुभकामनाएँ प्रदान की। **ब्र. निखिल आर्य,** गौतम नगर, दिल्ली

कठोर-वातोदरामय-हरी =मृद्वीका (द्राक्षा)

- ले.डॉ. सत्येन्द्र कुमार आर्य....

इसकी आरोही लता होती है। पत्र देखने में करेले के समान और रोगमयुक्त होता है। पत्तियों के मध्य में ४-५ जोड़ी सिरायें होती हैं। पुष्प हरितवर्ण, सुगन्धि और गुच्छों में लगते हैं। फल-गोस्तनाकार होते हैं जिनमें ३-५ बीज होते हैं। वसन्त ऋतु में पुष्प और ग्रीष्म में फल आते हैं। किन्तु शीत प्रदेशों में शरद् ऋतु तक फल होते हैं।

उत्पत्तिस्थान-यह उत्तर पश्चिम भारत पंजाब,काश्मीर तथा बलूचिस्तान और अफगानिस्तान में होता है। यह स्थिति बहुत पहले की हैं। आज औद्योगिक वनस्पति विज्ञान ने अद्‌भुत चमत्कार कर दिखाया है। जहाँ पहले भारत के बाजारों में केवल वर्षा ऋतु में चमन का अंगूर बिकता था किन्तु आज भारत में सर्वत्र बाजारों में लगभग सदैव ही उपलब्ध होता है। हाँ !! स्वरूप और गुण में कुछ न्यूनाधिक अन्तर अवश्य दृष्टिगोचर होता है। जिसको मुनक्का कहते हैं वह काले ओर हरित भूरे रंग का बीजयुक्त होता है।

नामः-लै० Vitis Vinifera, सं० द्राक्षा, (जो मनको प्रिय हो),मृद्वीका,(जो शरीर को मृदु-स्निग्ध करे),गोस्तनी,(गोस्तन के आकार का), हि०-दाख, मुनक्का, अंगूर, अं०-Grape.

मुनक्के में कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटाशियम, फॉस्फोरस और लौह होते हैं। इसके अतिरिक्त गोंद और शर्करा भी होती है। बीजों में स्थिरतैल तथा कषायाम्ल ५ प्रतिशत होता है। छिलके में टैनिन तथा लता और पल्लव में टंकणाम्ल होता हैं। इसका रस-मधुर,,गुण-स्निग्ध,गुरु,मृदु,विपाक-मधुर ओर वीर्य-शीत होता है। दोषकर्म-यह स्निग्ध,गुरु,मृदु, मधुर होने से वात का तथा मधुर और शीत होने से पित्त का शमन करता है। यह मेध्य और सौमनस्यजनक हैं। यह स्निग्ध और शीतमधुर होने से तृष्णानिग्रहण,स्नेहन और अनुलोमन है। यह फुप्फुसबलदायक,सन्धानकारक,कास,श्वास और क्षय में लाभप्रद है। यह वश्फ्य और गर्भस्थापन हैं। मधुर होने से यह जीवनीय,बल्य और वशंहण है। यह दाह आदि पैत्तिक विकारों को दूर करता है। इसका फल प्रयोग में आता है।

मात्रा-पाचन शक्ति के अनुसार।

विशिष्ट योग-द्राक्षारिष्ट, द्राक्षादिलेह, द्राक्षाद्य घृत, च्यवनप्राश अवलेह आदि अनेक योग हैं।

तेषां द्राक्षा सरा स्वर्या मधुरा स्निग्धशीतला।
रक्तपित्तज्वरश्वासतृष्णादाहक्षयापहा ।।(सु.सू.४६)

-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

सूचना

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों के सभी प्राध्यापकों एवं शोधच्छात्रों के लिए हर्ष का विषय 'आर्ष-ज्योतिः' का मूल्याङ्कित शोध विशेषाङ्क पहले प्रतिवर्ष में एक ही बार प्रकाशित होता था परन्तु अब त्रैमासिक कर दिया गया है। यह पत्र अन्ताराष्ट्रिय मूल्याङ्कित शोधपत्र (ISSN-२२७८-०९१२) है। विशेषाङ्क हेतु आप अपने शोध लेख प्रेषित कर सकते हैं। अप्रैल मास के शोध अङ्क के लिए आप अपने शोध लेख AAText Font में पेजमेकर प्रोग्राम में मुद्रित कर व पूर्ण संसोधन (प्रुफ देखकर) कर सी.डी. बना डॉक एवं ई.मेल द्वारा प्रेषित कर सकते है।

-कार्यकारी सम्पादक (आर्ष-ज्योतिः)दूरभाष-८८१०००५०९६, ९४११९०६१०४

कृषक?

- ब्र. गौरव आर्य

वह जब धरा को खोदता,
लगता था जैसे सोचता।
मानो वो पायेगा कनक,
जैसे लगी उसको भनक।।
भानू की तपती धूप में,
पानी भी न था कूप में।
वह था परिश्रम से थका,
आराम से वो था भगा।।
उसको पसीना आ गया,
आगे अंधेरा छा गया।
वो था नहीं फिर भी रुका,
न था वो संकट से झुका।।
क्या था उसे लालच की उसने,
फाड दी छाती धरा की।
वो खोदकर नीरस मही भी,
उसने फिर से ऊर्वरा की।।
जब खोद ली उसने धरा,
तब था कुदाली को धरा।
अब तो है सूरज भी ढला,
यह सोचकर घर को चला।।
घर में था खाना भी नहीं,
इक नन्हा-सा दाना नहीं।
परिवार भूखों सो रहा तो,
मैं भी भूखा ही सही।।
यह सोचता वो सो गया,
निज स्वप्न में वो खो गया।
अब था सवेरा हो गया,
खग-नाद से वो जग गया।।
निज खेत में फिर वो गया,
अब बीज उसमें बो दिया।
फिर घन उठे थे व्योम में,
चंचल तडित् भी व्योम में।।
अब था बरस जब घन गया,
तब खेत जल से भर गया।
तब लग रहा ऐसा था उत्
सहचर किसी को मिल गया।।
कुछ वक्त के पश्चात् थी,
उसकी फसल बलखाती-सी।
लहलहाती-सी इठलाती-सी,
श्रम गीत उसका गाती-सी।।
यह देख वह मल-युक्त मुख,
ऐसा था पुलकित हो गया।
मानो कमल रवि-रश्मि से,
आलस्य निज का खो गया।।
अब पक गई जब थी फसल,
तब काटकर उसको कृषक।
जब ले गया वह मंडी में,
हुई चेतना बंद कुंडी में।।
अब प्राप्त वह जो मूल्य था,
बस तृण के ही तुल्य था।
दो वक्त की रोटी मिली,
वह न मिला जो अमूल्य था।।
उसके सुतों का जो भविष्य,
सुन्दर स्वर्णमय ठोस था।
वह सच कहे तो आज सर-
सिज पत्र की ही ओश था।।
जब याद उसको आ गया,
वो था परिश्रम जो किया।
नेत्रों से जल था चल गया,
उत् सेतु नद में बह गया।।
उसकी न इच्छा थी कभी,
कि वत्स उसके भी सदा।
उसकी तरह ही रह सकें,
जिससे चिढ़ी थी सम्पदा।।
यह सोचता रहता सदा,
निज गात को खोता वह।
कृश-काय अब था हो गया,
साहस भी निज का खो गया।।
यमदूत मानो सो रहे,
थे उसकी शय्या पे अभी।
यह सोचकर इक वाक्य भी,
मुख से न निकला था कभी।।
इक दिन उसे यमदूत वे,
ऐसे पकड़ चलने लगे।
मानो मरुत के जोर से,
तरु पत्र थे उडने लगे।।
है और भी ऐसे कृषक,
जो प्राण निज के त्यज गए।
निज वत्स गौरव के लिए,
बलिदान खुद का कर गए।।
है स्वर्ग जैसी इस मही पर,
देव सम मनहु कृषक।
है वो सुरासुर के समर में,
इन्द्रवत् जानो कृषक।।
बस अब उसी मही देव,
को मैं अन्त में करता नमन।
निज लेखनी '**गौ-रव**' का अब,
बस मैं यही करता शमन।।

श्रेणी : उत्तरमध्यमा द्वितीय वर्ष
गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून

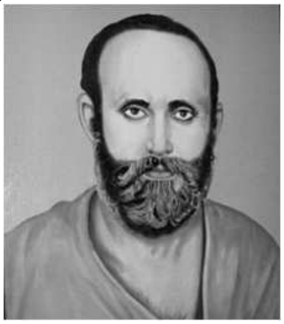

अथ श्री ओमानन्द लहरी

- आचार्य यज्ञवीर व्याकरणाचार्य

सहृदया:! पाठका: पत्रिकाया: अस्मिन् संस्कृतभागे श्री ओमानन्दलहरी नामकं पुस्तकं गतनवम्बरमासात् प्रभृति क्रमश: प्रकाश्यते। श्लोकानामार्यभाषा अपि आचार्य धनञ्जयकृता सहैव प्रकाश्यते येन बोधगम्यता स्यादिति - **कार्यकारिसम्पादक:**

क्रमश:...........

आभास: पुनस्तमेव जयविषयमाचष्टे-

जयोऽभूत्कुण्डल्या: धवलयशसाञ्चार्यविदुषाम्,
जयो गोभक्तानां द्यवि निशि च यैर्यै: प्रयतितम्।
जयोद्घोषैर्व्याप्ता हरितहरिभूमिश्च सुखदा,
गुरोरद्य द्वारे जयजयजयानां कलकल:।।३१।।

व्याख्या: कुण्डल्या:=कुण्डलीग्रामस्य जय: अभूत् जयोऽजायत, धवलयशसामार्यविदुषां च=श्वेतयशो भाजां श्रेष्ठानां विज्ञजनानां च विजयोऽभवत् यै यैरपि गोभक्तै: प्रयतितम्=प्रयत्नो विशेषो विहित: द्यवि निशि च=अहर्निशं तेषां गोभक्तानाम्=गवां भक्तानां जयोऽस्तु। सुखदा=सुखप्रदात्री हरितहरिभूमिश्च= हरितवर्णाहरयाणाप्रदेशस्य धरा च जयोद्घोषै:=जय इति शब्दस्य उच्चै: घोषै: जयशब्दै: व्याप्ता=परिपूर्णा (वर्तते) अद्य=अस्मिन् द्यवि (इति निरुक्ते यास्क:) गुरो: द्वारे=गुरुकुलद्वारे जयजयजयानां=जय जय जय इत्येतेषां शब्दानां कलकल:=ध्वनि: इत्येव श्रूयते।।३१।।

आर्यभाषा: कुण्डली गाँव की विजय हुई, अमल यशस्वी आर्य विद्वानों की भी जय हुई, जिने गोभक्त ने दिन रात सतत प्रयत्न किया उन सभी गोभक्तों की विजय हुई और सुखदायी हरियाली युक्त हरियाणा भूमि भी जय शब्द के ऊँचे घोषों से परिपूर्ण हो गयी, आज गुरुकुल के दरवाजे पर जय जय जय इन शब्दों की कलकल ध्वनि हो रही है।।३१।।

आभास: वैदिकज्ञानप्रदानेन अज्ञानान्धकारानिवारणं वर्ण्यते-

अबोधातिध्वान्तं हृदि हृदि ततं भारतनृणाम्,
ऋषेरग्नेर्ज्ञानै: सुजनहृदयेभ्योऽपहृतवान्।
तथा वायोर्वेदं विकलहृदयेऽधाद्यतिवर:,
महर्षे: सामानि बुधिरविकृतानि क्वणितवान्।३२।

व्याख्या: अबोधातिध्वान्तम्=अज्ञानस्य अतिगहनान्धकारं भारतनृणाम्=भारतीयानां मनुष्याणां हृदि हृदि ततम्=हृदये हृदये विस्तृतम् अभवत्, अग्ने: ऋषे: ज्ञानै:=महर्षे: अग्ने: ज्ञानविज्ञानै:, सुजनहृदयेभ्य:=सज्जनानां हृदयेभ्य: यतिवर: अपहृतवान् गहनान्धकारमिति, इत्थमेव च विकलहृदये=अकर्मण्यताया: दु:खेन दूयमाने मानवहृदये यतिवर वायो: महर्षे हृदये प्रकृटीभूतं यजुर्वेदम् अधात्= धारणं कारितवान्। तथा बुधरविकृतानि=विदुषो रवे: कृतानि महर्षे: सामानि=महतो विदुष: ऋषे: हृदये प्रकटीभूतानि सामगानानि यतिवर क्वणितवान्=झंकृतवान्।।

आर्यभाषा: अज्ञान का गहन अन्धकार भारत के जन जन के हृदय में फैल चुका था, महर्षि अग्नि के ऋग्वेदीय ज्ञानविज्ञानों द्वारा यतिवर ने उसे दूर कर दिया। इसी प्रकार अकर्मण्यता के दु:ख से दुखी मानव हृदय में महर्षि वायु का यजुर्वेद धारण करा दिया अर्थात् कर्म द्वारा हृदय की विफलता दूर की तथा यतिवर ने विद्वान् महर्षि रवि कृत सामगान की मधुर वीणा बजा दी। इस प्रकार जन जन तक विद्यात्रयी पहुँचा दी।।३२।।

आभास: सामाजिकवैषम्यं कथं दूरीकृतमिति वर्णयन् समाचरष्टे-

समाजेऽस्पृश्यानां हरिजननराणां खलु दशाम्,
विलोक्यौमानन्द: सदयहृदयेनातिरभसम्।
चकारैकां शालां वटुकपठनायात्र रुचिराम्,
निशायां पाठित्वा धवलयशसा वै स जयतात्।।३३।।

व्याख्या: समाजे=भारतीयसमाजे अस्पृश्यानां हरिजननराणाम्=स्पर्ष्टुमयोग्यानां तथा कथितहरिजनमानवानां

खलुदशाम्=निश्चयेन दुरवस्थां विलोक्य=दृष्ट्वा अतिरभसम्=अतिशीघ्रम्, ओमानन्दः=इत्याख्यो यतिवरः सदयहृदयः=दययासहितं हृदयं यस्य सः सकरुणेन चेतसा इत्यर्थ, अत्र=अस्मिन् स्थाने हरिजन आवास समीपे, वटुकपठनाय=बालानां पठनार्थं रुचिराम्=शोभनाम् एकां शालाम्=एकां पाठशालां चकार निर्मापितवान् निशायां रात्रिकाले च पाठित्वा= अध्याप्यधवलयशसा=विमलकीर्त्या वै=निश्चयेन सः=ओमानन्दः जयतात्=विजयताम्।।३३।।

आर्यभाषा : भारतीय समाज में तथाकथित अछूत हरिजन लोगों की दुर्दशा देखकर अतिशीघ्र स्वामी ओमानन्द जी ने दयालु हृदय से हरिजन बस्ती के समीप एक सुन्दर पाठशाला बनाई तथा रात के समय वहाँ पर पढ़ाकर वह विमलयश से विजय प्राप्त करे।

आभास : अस्पृश्यतानिवारणं तथा कुपोषणमपाकर्तु तेषां अपूर्व योगदानं वर्णयन्नाह-

कुपोषाहारत्वात् कृशतनुशिशूनां निबलताम्,
अपाकर्तुं धेनोः सुमधुरपयोऽदात् सहृदयः।
तथास्पृश्यैः सार्धं भजनमशनञ्चापि कृतवान्,
कुरीत्याः नाशार्थं सततयतनञ्चात्र विहितम्।।३४।।

व्याख्या : सहृदयः=समानः हृदयः यस्य सः कुपोषाहारत्वात् कुपोषणस्य आहारकारणत्वात्, पोषक तत्वैः युक्तस्य भोजनस्य अभावात् इत्यर्थः कृशतनुशिशूनाम्=कृशकायानां बालकानां निबलताम्=अबलताम् दुर्बलताम् अपाकर्तुम्=दूरीकर्तु तेभ्यो बालेभ्यः धेनोः सुमधुरपयः=गोदुग्घं सुमधुरं आरोग्यप्रदं अदात्=प्रदत्तवान्। तथा तैः अस्पृश्यैः=तथाकथितैरस्पर्शनीयैः (अछूत) सार्द्धम्=साकम्, सहभजनम्=पूजा यज्ञादिकम्, अशनम्=भोजनं सहभोजादिकं च अपि कृतवान्, विहितवान् कुरीत्याः=तथाकथितायाः कुरीत्याः नाशार्थम्=समीपवर्तीषु क्षेत्रेषु हरिजनावास समूहेषु सततयतनम्=निरन्तरप्रयत्नं विहितम्=कृतमिति।।३४।।

आर्यभाषा : आहार के अभाव में कुपोषणग्रस्त दुर्बलशरीर वाले बालकों की दुर्बलता को दूर करने के लिए करुणाशील स्वामी जी ने सुमधुर गो दुग्ध प्रदान किया तथा छुआछूत की कुप्रथा के नाश के लिए उनके साथ यज्ञादि करना और साथ में सहभोज आदि करना यहाँ नरेला के आस-पास के क्षेत्र में हरिजन आवास समूहों में निरन्तर प्रयत्न किया।।३४।।

आभासः हरिजनस्त्रीणां कृते स्वकीय पैतृकं कूपं जलाहरणाय प्रदाय आदर्शस्थापनस्यात्र वर्णनं क्रियते-

जलाभावादार्त्ताः हरिजनसुनार्योऽत्र नितराम्,
समाजेऽस्मिंश्चापां द्विजसुजनकूपाद्धरणतः।
निषेधः प्रख्यातः जनगणकृतो भारतभुवः,
कुरीतिं तां भित्वा परमसफलोऽभूत् स्वतपसा।।३५।।

व्याख्याःअत्र=नरेलाराख्ये ग्रामे हरिजनसुनार्यः=दलितानां सुगृहिण्यः (नृनरयो वृद्धि चेति ङीन् प्रत्यये नारी) जलाभावात्=पयसा विना, नितराम्=पूर्णरूपेण आर्त्ताः=पीडिताः (आसन् इति शेषः) अभवन्। अस्मिन् =एतस्मिन् समाजे=भारतीयग्रामीणसमूहे भारतभुवः=भारतदेशीयः जनगणकृतः= मानवसमूहद्वारानिर्मित, द्विजसुजनकूपात्=सवर्णसज्जनानां कूपात् 'अन्धुरन्धः प्रहिकूपः' कुवन्ति मण्डूकाः अस्मिन् (कु+पक् दीर्घश्च) द्विजः=यस्य द्वितीयं जन्म गुरोः गर्भाज्जायते स द्विजः उच्यते चात्र मनुना 'संस्काराद् द्विज उच्यते' अपाम्=जलानाम् हरणतः=आदानात् निषेधः प्रख्यातः=निषेधाज्ञा प्रसिद्धा (अस्ति इति शेषः) ताम्=उपर्युक्तां कुरीतिम्=कुप्रथां भित्वा=त्रोटयित्वा विहाय स्वतपसा=निजेन द्वन्द्वसहिष्णुत्वेन आचार्यवर्यः परमसफलोऽभूत्=विशेषसाफल्यमधिगतवान् इत्यर्थः।।३५।।

आर्यभाषाः यहाँ नरेला नामक गाँव में हरिजनों की सुगृहिणियाँ पानी के अभाव में अत्यन्त दुःखी थी, भारतीयजन समुदाय द्वारा सवर्णो के कूप से जल लेने की निषेधाज्ञा प्रसिद्ध थी, इस कुप्रथा को तोड़कर स्वामी जी ने अपने पैतृक कूप से पानी देकर अपने तप के प्रभाव से परम साफल्य प्राप्त किया।।३५।। **शेष अग्रिम अंक में.......**

'आर्ष-ज्योतिः' को घर बैठे पढ़ने के लिए क्लिक करें- www.pranawanand.org

योगदर्शनेऽष्टाङ्गयोगः

-सौरभार्यः

योग शब्दः **'युज् समाधौ'** इत्येतस्मात् धातोः घञ् प्रत्यये कृते सति निष्पन्नो भवति। महर्षिः पतञ्जलिः योगदर्शने योगविषये कथयति यत् 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात् चित्तवृत्तीनां निरोध एव योगो वर्त्तते। योगदर्शने महर्षि पतञ्जलिना योगस्याष्टाङ्गानामुल्लेखः कृतः **'यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान-समाधयोऽष्टावङ्गानि'**

१. **यमाः** - **'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः'**।

अहिंसा-सर्वैः प्राणिभिः सह वैरभावं विहाय प्रीतिपूर्वकं व्यवहारः अहिंसोच्यते।

सत्यम्-यद् वस्तु यथाऽस्ति तस्य तेनैव रुपेण कथनं सत्यमभिधीयते।

अस्तेयम्-चौर्य न करणीयं कदाचित् सद्व्यवहारः कर्त्तव्यः सदैव इत्यस्तेयमुच्यते।

ब्रह्मचर्यम्-जितेन्द्रियः स्यात्।

अपरिग्रहः-आवश्यकताया अधिकं न संचेतव्यम्।

२. **नियमाः**- **'शौचसन्तोषतपस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः'।**

शौचम्-बाह्यरुपेण जलेन शरीरशुद्धिः, रागद्वेषासत्यादिदोषान् अपनीत्यान्तरिकपवित्रता च।

सन्तोषः- धर्मयुक्तपुरुषार्थेण लाभे प्रसन्नता किन्त्वहंकारभावो भवेदप्राप्तौ च कदाचिदपि व्यथितो न स्यात्।

तपः- **'द्वन्द्वसहनं तपः'** प्रसन्नतापूर्वकं सुखदुःखहानिलाभमानापमानशैत्यौष्ण्यादीनां द्वन्द्वानां सहनम्।

स्वाध्यायः- सच्छास्त्राणां मनसाऽध्ययनाध्यापनम्।

ईश्वरप्रणिधानम्- परमेश्वरं प्रति स्वसमर्पणम्।

आसनम्-**'स्थिरसुखमासनम्'** यस्यामवस्थायां शरीरं स्थिरं सुखयुक्तं च स्यात् तदासनमुच्यते।

प्राणायामः- **'तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः'** आसनसिद्धेरनन्तरं श्वासप्रश्वासयोः गत्याः यथाशक्ति रोधनं प्राणायाम उच्यते।

प्रत्याहारः-**'स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्यस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः'** अर्थात् इन्द्रियाणां विषयैः सह सम्बन्धं न संस्थाप्येश्वरे चित्तस्थिरीकरणम्।

धारणा-देशबन्धश्चित्तस्य धारणा नाभिचक्रे हृदयपुण्डरीके मूर्ध्निनासिकाग्रे जिह्वाग्रे इत्येवमादिषु देशेसु बाह्ये वा विषये चित्तस्य वृत्तिमात्रेण बन्ध इति धारणा।

ध्यानम्-**'तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्'** धारणाद्वारा यदा कस्मिंश्चिदपि वस्तुनि मनः एकाग्रं कृत्वा तद्वस्तुनि सततं मननं चिन्तनं च क्रियते तत् ध्यानमुच्यते। ध्येयवस्तु विहाय कस्मिन्नपि विषये विचारोत्पत्तिर्न भवति। अत्र ध्येयवस्तुनो ज्ञानं पूर्णतया स्पष्टं भवति।

समाधिः-**'तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव-समाधिः'** इदं योगस्यान्तिमं सोपानमस्ति यदा ध्यानं ध्येयवस्तुन आकारमेव गृह्णाति। यदा मनुष्यः तदा मनुष्यः तदाकारकारितचित्तवृत्तिरिति भवति तदा समाधेरुदयो भवति। अत्र जीवात्मपरमात्मनोः मेलनं भवति। योगे पूर्णतां प्राप्तुं योगस्याष्टानामङ्गानामभ्यासः परमावश्यकोऽस्ति-'अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते'।

-श्यामप्रसादमुखर्जीमहाविद्यालयः
दिल्लीविश्वविद्यालयः

संस्कृत-शिक्षणम्

ब्र. शिवदेवार्यः

अयि सुधियः पाठकाः! संस्कृतस्य शिक्षणं न कठिनम्। संस्कृतं तु अतीव सरलं मधुरं च वर्त्तते। आगच्छत वयं प्रयोगं कृत्वा पश्यामः। एतस्मिन् विभागे प्रत्यङ्कं व्यावहारिकज्ञानाय सरलानि कानिचन वाक्यानि सरला नियमाश्च प्रदीयन्ते। अत्र विचार्य पठित्वा भवन्तोऽपि संस्कृतेन व्यवहारं कर्तुमर्हन्ति।

तुम्हारा नाम क्या है?	तव नाम किम्?
प्रेम से प्रेम उत्पन्न होता है	प्रेम्णः प्रेम जायते।
हमारे विद्यालय में जितने छात्र हैं,उतनी छात्राएँ भी हैं।	अस्माकं विद्यालये यावन्तः छात्राः तावत्यः छात्रा अपि सन्ति।
तब तक काम करो, जब तक गुरु न आवे।	तावत् कार्यं कुरु, यावत् गुरुः नागच्छेत्।
अकारण विवाद न करो।	निष्कारणं विवादं मा कुरु।
सुनीत रथ के पीछे जाता है।	सुनीतः अनुरथं गच्छति।
धन के आभाव में देव पुस्तकें नहीं पढ़ता।	धनाभावे देवः पुस्तकानि न पठति।
गौरव कुएँ के पास रोने जाता है।	गौरवः उपकूपं रोदनाय गच्छति।

नियमः –

१. अङ्केऽस्मिन् समासविषयं ज्ञेयम्। **'समसनं समासः'** अर्थात् समासस्य अर्थः संक्षेपः ज्ञेयम्। यस्मिन् अनेकानां पदानाम् एकपदम्, अनेकानां विभक्तिनाम् एकविभक्ति, अनेकानां स्वरानाम् एकस्वरः स्यात् सः समासः कथ्यते। यथा : राज्ञः पुरुषः–राजपुरुषः, कूपस्य जलम्–कूपजलम्, कुम्भस्य समीपम्–उपकुम्भम्, लम्बौ कर्णौ यस्य स – लम्बकर्णः, रामश्च लक्ष्मणश्च – रामलक्ष्मणौ इत्यादयः।

२. मुख्यतः समासाः पंच विधा मन्यन्ते–१.अव्ययीभावः, २. तत्पुरुषः, ३. द्वन्द्वः, ४. बहुव्रीहिः, ५. केवलसमासः।

द्वन्दोदिगुरपि चाहं मदगेहे नित्यमव्ययीभावः। तत्पुरुषकर्मधारयः येनाहं स्याम बहुवीहिः।।

धातुरूपम्	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
जनी प्रदुर्भावे (उत्पन्न होना)	जायते	जायेते	जायन्ते
आत्मनेपदम्	जायसे	जायेथे	जायध्वे
लट् लकारः	जाये	जायावहे	जायामहे

शब्दकोशः –

नामन्	नाम।	प्रेमन्	प्रेम।	धामन्	धाम।
दामन्	रस्सी।	लोमन्	बाल।	जन्	पैदा होना।
संपद्	होना।	उत्पद्	उत्पन्न होना।	विद्	होना।
मन्	मानना।	निर्विघ्नम्	निर्विघ्न।	निष्कारणम्	बिना कारण के।
यथाशक्ति	शक्तिभर।	यावत्	जितना।	तावत्	तब तक।
कियत्	कितना।	इयत्	इतना।	अनुकूलः	अनुकूल।